

हिजकिय्याह का विश्वास (The faith of Hezekiah)

हिजकिय्याह ने उस पत्र को यहोवा के सामने फैला दिया। उसे एक महान राजा से एक धमकी भरा पत्र मिला था। वह काफी भाग्यवान था जो यशायाह के विश्वास को गवाही के रूप में देख सका। दोनों की ही अपनी-अपनी परीक्षाएँ थीं, परंतु दोनों मिलकर उस देश में आत्मिक जागृति लाए। हिजकिय्याह ने पूरे देश को एक सच्चे पश्चात्ताप की ओर संचालित किया। हिजकिय्याह ने पूरे देश भर में काम आरम्भ किया। और जब आत्मिक जागृति आई, निरीक्षण के लिए उसने फसह पर्व का भी आयोजन किया। जब राष्ट्र अध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बना, उसके बाद एक बहुत बड़ी परीक्षा उनके सामने आई। हिजकिय्याह उठकर उस धमकी भरे पत्र को परमेश्वर के भवन में, प्रभु के सामने पेश किया। मन परिवर्तन एक नई चेतना में प्रवेश कर यह एहसास दि लाता है कि आप परमेश्वर के हैं। और फिर बोझ से दबा हुआ विवेक, पाप से मुक्त होता है। एवं एक नई चेतना प्रवेश पाती है। हिजकिय्याह ने परिस्थिती का सामना अटूट विश्वास के साथ एक नेता के रूप में किया।

आप अकेला आगे नहीं बढ़ सकते हैं। राष्ट्र, चर्च, एवं परिवार को इकट्ठा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। और जब हम इकट्ठे आगे बढ़ेंगे तो एक दूसरे को आगे की ओर बढ़ाएंगे। हिजकिय्याह उस धमकी-पत्र को परमेश्वर के पास ले गया। एवं उसका मन स्थिर था। जो मन परमेश्वर पर एवं उसके वचनों पर ध्यान लगाता हो उस मन की स्थिति ऐसी ही होती है। यशायाह (37:32) "क्योंकि यरूशलेम से बचे हुए और सिय्योन पर्वत से भागे हुए लोग निकलेंगे। सेनाओं का यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेंगे।" कुछ जगहों में तो कोई चमत्कार नहीं होता है, क्योंकि वहाँ परमेश्वर के प्रति चेतना नहीं है। विश्वास क्या है? ऐसा आभास जो परमेश्वर के प्रति चेतना रखता हो, यह जानते हुए कि वह आप में गहरी रुचि रखते हैं। हिजकिय्याह प्रार्थना कर रहा था तब परमेश्वर ने उसे एक प्रतिज्ञा दी। और

सन्हेरीब की सेना एक ही रात में तबाह हो गई। सन्हेरीब ने तो अपनी सेना पर भरोसा किया था परंतु वे सब अब मर चुके थे और उसे वहां से भागना पड़ा एवं उसके खुद के बेटे ने उसका कत्ल कर दिया। हिजकिय्याह के जीवन में दूसरी विपत्ती तब आई जब वह बिमार पड़ा। और तीसरी विपत्ती तब आई जब चापलूसी के द्वारा उसकी फिर से परीक्षा हुई जब कोई बड़ी घटना घटती है , तो हम कई बार लापरवाह हो जाते हैं एवं , खुद को अध्यात्मिक रूप से नीचे गिरने का मौका देते हैं। और अपनी प्रार्थनाओं का महान उत्तर पाने के पश्चात् शैतान हम पर वार करता है। लोगो की चापलूसी हिजकिय्याह के जीवन में एक बहुत बड़ा संकट का कारण बन पड़ा था। और इसी बात में वह विफल हुआ। परमेश्वर चाहते हैं कि वे हमारे जीवन के द्वारा महिमा पाएँ। इसलिए हम सभी को आगे की ओर बढ़ना चाहिए। और हम कभी चापलूसी को स्वीकार न करें।

जो शिक्षा हम दूसरों को देते हैं, हमें भी वैसे ही जीवन जीना चाहिए। हमारे अंदर प्रेम एवं विश्वास की कमी न पाई जाए। चापलूसी भरी नाजुक स्थिति में भी हमें परमेश्वर के प्रति सच्चा बनके सारी महिमा उन्हीं को देनी चाहिए।

- एन दानिएल।

[संदेश-उपदेश - http://lefi.org/hindi/HindiSermons.htm](http://lefi.org/hindi/HindiSermons.htm)